MANUAL OF HISTORY

(ANCIENT.)

पुरावृत्तसार ।

Translated into Hindi

BY

GOVINDA CHANDRA SINGHA.

Revised and corrected by Pundit Chhotu Ram Tivary

Sanskrit Professor Patna College.

HOOGHLY.

Printed by K. N. Bhattacharje

BUDHODOY PRESS.

पुरावृत्तसार।

पहला अध्याय।

कोई आदमी आपसे आप अपने जनम का वृत्तान्त नहीं जान सका। जब तक हम लोग अपने मां बापसे न सुनें कि हमारा जन्म किस तरह हुआ और अब हमारा सिन कितने बरस का है तब तक हम लोग इस विषय में कुछ भी नहीं जान सके इस से यह बात पाई जाती है कि मनुष्य की सृष्टि का विवर्ण कभी किसी के द्वारा से प्रकाश नहीं हो सका है। जब तक ईश्वर आप ही हम लोगों को इस का हाल न बतावे तब तक हम लोग कुछ भी नहीं जान सकते इस कारण हरजाति के लोगों को जो कुछ इस बारे मालूम हुआ है सो उनके धर्म की पुस्तकों से मिला है। यूरोप के पंडितों ने कहा है कि ईश्वर ने पृथ्वी की सृष्टि करने के कुछ रोज़ बाद एक स्त्री और पुरुष को पैदा किया

जो पुरुष पैदा हुआ उस का नाम आदम था और उस की स्त्री का नाम हौआ बहुतेरों के मतसे यह बात मालूम होती है कि उस दम्पती का जनम ४००४ च[illegible]र चार बरस पहले ईसा के जनम के हुआ था ये दोनों किसी अच्छे बाग़ीचे में रहते थे। उस समय दुख का कुछ नाम भी न था लेकिन जब इन्हों ने ईश्वर की आज्ञा न मानी तभी से इन को दुनिया का दुःख भोगना पड़ा। प्राचीन समय के लोग उस काल का वर्णन करते थे कि वह अवस्था सब अवस्थाओं से उत्तम थी हिन्दुओं के पुराण में सत्ययुग का हाल जैसा लिखा है वैसा ही सब धर्मवालों की पुस्तकों में पाया जाता है। यूनानवाले इसको सुवर्णकाल कहते थे और इस्राएल लोगों के बायेबिल और मुसल्मानों के कुरान के रूसे मालूम होता है कि इसी समय में बाबा आदम और माता हौआ अदन के बग़ीचे में रहते थे। सत्ययुग आदमियों की पहली अवस्था थी। जैसे आदमी लोग लड़कपन की सब बातें भूल जाते हैं केवल दो एक बड़ी बड़ी बातें याद रहती हैं वैसे ही सत्ययुग के इतिहास पर ध्यान देने से दो एक बहुत प्रसिद्ध बातें मालूम होती हैं। उन में से जल-प्लावन (सैलाब) का वर्णन सब से अधिक प्रसिद्ध है। कहते हैं कि किसी समय में असुर लोगों ने जन्म लेकर सनातन धर्म की जड़ उखाड़नी शुरू किया जब पृथ्वी मनुष्यों के पाप कर्म बढ़ जाने के कारण से उनका भार न सह सकी तो परमेश्वर ने

इस पृथ्वी को जल में डुबा कर सारे लोगों को नाश कर दिया। प्राचीन समय के बड़े बड़े लोगों ने जो कुछ इसके बारे में कहा है वह नीचे लिखा जाता है। हिन्दुओं के पुराण में लिखा है कि भगवान ने मच्छ अवतार लेकर वैवस्वत मनु को एक जहाज़ बनाने का हुक्म दिया वैमनू हरजानवर का एक एक जोड़ा और सात मुनियों को साथ लेकर जहाज़ पैर सवार हुये उस के बाद पृथ्वी जलमें डूबगई। अगले समय के कैलडिया लोगों के इतिहास में यह लिखा है कि आदम की दसवीं पीढ़ी में जलप्राव हुआ था उस समय में यीसुथ्रिस नामी एक धर्मात्मा राज करता था उस ने जयाने नामी किसी देवता की आज्ञा से जिस की सूरत मछली और आदमी की सी थी एक जहाज़ तैयार किया और तब हर जानवर का एक एक जोड़ा और अपने भाई बन्दों को साथ लेकर जहाज़ पर सवार हुआ बाद इसके दुनिया पानी में डूब गई। मिसर लोगों से भी इसका हाल कुछ पाया गया है उन सभों कि मत से, ईसौरिस नाम एक आदमी को ईश्वर ने जल-प्लावन में रक्षा कर के बचाया था। सार्डरिया देश में एक खाई है उसको देखकर वहां के रहनेवाले यह कहते हैं कि इसी खाई से जल-प्लावन का पानी पाताल में चला गया इससे यह मालूम होता है कि सार्डरिया के आदमी भी जल-प्लाव का हाल जानते थे। चीन के लोग भी पुराने जातियों में हैं उन के शास्त्र में लिखा है कि एक समय चीन देश में भारी जल-प्लाव हुआ था

इस विपत से एक आदमी यूयानस् नाम बाल बच्चे समेत बच गया था और सबके सब डूबकर मर गये, लेकिन चीनी लोग यह कहते हैं कि भारी जलप्लाव सारी दुनिया में नहीं हुआ था। यूनानियों ने दो जल-प्लावन का हाल लिखा है लेकिन वे दोनों विशेष जगहों में हुये थे। इस जल-प्लावन से सारी पृथ्वी डूब गई थी इस का हाल कुछ भी नहीं लिखा। इन दो जल-प्लावन में से पहले में एक ओगाइजेस और दूसरे में डियूकेलियन बच गया था। फ़िनिशिया लोगों के प्राचीन समय का इतिहास मिला है लेकिन उसमें जल-प्लावन का कुछ हाल नहीं लिखा। क्रस्तान लोगों के बायेबिल में यह लिखा है कि नूया (नूह) और इनके तीन बेटे शेम, हैम, जाफ़ित, अपनी स्त्री समेत ईश्वर की कृपा से एक बड़े जहाज़ पर सवार होकर बच गये। बायेबिल की टीका बनानेवाले यह कहते हैं कि यह जल-प्लावन २३००, दो हजार तीन सौ बरस ईसा के पहले हुआ था॥
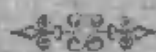
दूसरा अध्याय ।

जुदे जुदे रंग आकार व्यवहार और भाषा के थोड़े लोगों को एक जगह देख ने ही से इस बात के जाने की इच्छा होती है, कि इन भेदों का क्या कारण है, पंडित लोग आज तक इस प्रश्न का उत्तर सभों के मत के अनुसार न दे सके हैं किन आज कल के पंडितों ने इस का कुछ हाल लिखा है वह यह है कि आदमी ५ पांच जातियों में बांटे गये हैं उनमें एक का नाम कौकेशियन। इन लोगों का रंग गोरा सिर गोल माथा चौड़ा नाक बड़ी और ऊंची मुख-कोण बड़ा इसी तरह के बहुत से सौन्दर्य्य के चिन्ह हैं यह लोग बुधि और धर्म में और जात के लोगों से बढ़चढ़ के हैं उत्तर में स्कोटलेंड और दखिन में हिन्दूस्तान इन दोनों के बीच के रहने वाले कौकेशियन हैं। दूसरी जाति के लोग मुग़ल कहलाते हैं इन लोगों का रंग पीला नाक छोटी गाल ऊंचा सिर ठीक गोल नहीं दोनों और कुछ चिपटा मुख कोण कुछ छोटा है। मुग़ल लोग कौकेशियन लोगों से बुधि कम रखते हैं उत्तर मेरु के नज़दीक जितने देश हैं और पच्छिम तुरस से लेकर पूरब जापान तक जितने देश हैं इन सभों में मुग़ल लोग रहा करते हैं तीसरी जाति का नाम मलाये इन सभों का रंग भूरा नाक बड़ी माथा ऊंचा मुंह बड़ा मसगुरा कुछ

बाहर निकला हुआ मुख ओष मुगलों से छोटा यह लोग बिलकुल मूर्ख नहीं है धर्म के बारे में समझ इन लोगों को कम है पूरब के प्रायद्वीप और उसके निकट के द्वीप में रहते हैं। चौथी जाती को आमेरिक कहते हैं। इन सभों का रंग लाल सिर छोटा और नांक तोते के ठोर के ऐसा सिर के ऊपर का भाग ऊंचा और नीचे का भाग चिपटा इन लोगों को कोई विद्या जल्द सिखाई नहीं जा सक्ती है ये लोग अपने दुश्मनों से बदला लिया करते हैं और अमेरीका के सब जगहों में रहा करते हैं आजकल कैकेशियन लोगों ने यूरोप से वहां जा कर उन लोगों को वहां से निकाल दिया है पांचवीं जाति का नाम ईथियोपियाइन इन लोगों का रंग काला नांक छोटी, छोटा माथा बाल घुरघुआ होंट मोटा इन लोगों का भुजा किहुनी से पहुंचे तक बहुत बड़ा होता है ये लोग बहुत मूर्ख होते हैं अफ्रिका के मध्य-भाग और हिन्द के समुद्र के टापूओं में रहा करते हैं॥

तीसरा अध्याय।

भाषा के भेदों का हाल।

देखने में यह मालूम होता है कि हर जाति के लोगों की भाषा अलग भिन्न है, एक जाति के मनुष्य दूसरी जाति के मनुष्यों की बात नहीं समझ सकते हैं। जो केवल बंगला जानता है वह अंगरेज़ी नहीं समझ सकता, और जो अंगरेज़ी ही जानता है वह कभी बंगला या फ़ारसी का एक अक्षर भी नहीं समझ सकता है। लेकिन पण्डितों ने यह ठहराया है कि आदमियों में जितनी तरह की भाषा चलतीं हैं सब कैएक मूल भाषाओं से उत्पन्न हुई हैं। उन मूल भाषाओं के अवान्तर भेद से और सब भिन्न भिन्न भाषा उत्पन्न हुई हैं। अचम्भे की बात यह है कि मनुष्यों के स्वाभाविक जाति भेद के अनुसार उनकी भाषा में भेद हुए हैं। ऊपर कही हुई मूल भाषाओं में से एक का नाम ईरानी है। कोई कोई इस को हिन्दू यूरोपीय कहते हैं। यह भाषा आज कल किसी एक ख़ास देश में प्रचलित नहीं है। लेकिन इसके अनेक लक्षण बहुत सी प्रचलित भाषाओं में देख पड़ते हैं। ईरानी, या हिन्दू, यूरोपीय भाषा की कैएक प्रधान शाखा ये हैं (१) संस्कृत जो इस देश में प्रचलित है (२) ज़ेन्द प्राचीन पारसी लोगों

में चलती थी (३) लाटिन प्रसिद्ध रूम लोगों की भाषा। (४) ग्रीक प्रसिद्ध युनानी लोगों की भाषा (५) स्लावनिक रूस के इलाके के बहुत देशों की भाषा। (६) लेटिक लिथूयानिया प्रदेश की भाषा। (७) गथिक इसी से जरमन भाषा उत्पन्न हुई है। (८) केलटिक यह भाषा रूमी लोगों के समय में यूरोप की बहुत सी जगहों में प्रचलित थी। इन सब भाषाओं में से अनेक शब्दों का मूल एक ही समझा जाता है। देश भेद से कारण उन का उच्चारण भिन्न भिन्न सुन पड़ता है। लेकिन किस भाषा के उच्चारण में क्या विशेष है इसका भी नियम पण्डितों ने किया है। जो किसी भाषा का एक शब्द बोला जाय तो पण्डित लोग सहज ही बतासकेंगे कि उस शब्द का उच्चारण दूसरी भाषा में किस तरह से हो सकता है। ईरानी भाषा की एक और प्रकृति यह है कि किसी शब्दका कोई दूसरा अर्थ करने में उसके पहले या पीछे दूसरा शब्द मिलाया जाता है। यह मिला शब्द प्रधान शब्द के साथ मिलकर उसकी विभक्ति या उपसर्ग समझा जाता है।

काकेसीय जाति के अन्तर्गत जो एक और जाति है उन की भाषा पूर्वोक्त ईरानी जाती की भाषा नहीं है। उन की भाषा का नाम सेमेटिक है। असूरीय,प्राचीन आबिसिनीय, फिनिसीय अरब, और यहूदी या हिब्रु ये सब भाषा इसी प्रकार की हैं। सेमेटिक भाषा के प्राय: सब शब्द धातुओं से बनते हैं। लेकिन उन सब धातुओं के साथ विभक्ति

मिलने से दूसरे रूप नहीं हो जाते हैं। बहुत सी जगहों मे धातु के अन्तर्गत वर्णों के रूपान्तर हो जाने से दूसरा अर्थ होजाता है। शेमेटिक जाति की भाषाओं के सब धातु प्राय तीन हल वर्णों के जोग से बनते हैं। केवल एक असंयुक्त वर्ण से कभी नहीं बन सकते हैं। यह भाषा शेम के वंश मे प्रचलित है इस लिये इस का नाम शेमेटिक है।

और एक प्रकार की भाषा उसका नाम तुरानी वा तातार है। इस बात के बहुत चिन्ह पाये जाते हैं कि इस भाषा के बोलनेवाले लोग किसी समय में युरोप के बहुत पश्चिम हिस्से से ले हिन्दुस्तान के दक्षिण हिस्से तक रहते थे। हम लोगों के दक्षिण देश में जो तामिल भाषा आज तक प्रचलित है वह तुरानी भाषा से निकली है। उन असभ्य जंगली लोगों की भाषा जो हमारे देश की किसी किसी जगहों में रहते हैं तातार भाषा के सदृश है। तुरानी भाषा में कुछ विशेषता नहीं देख पड़ती है, इस की क्रियाओं का प्राय रूपान्तर नहीं होता। शब्दों के भी रूप भेद अधिक नहीं होते हैं।

चीनवालों के आचार व्यवहार जैसे दूसरे जाति के लोगों से भिन्न हैं वैसे ही उनकी भाषा भी दूसरी किसी जाति की भाषा के समान नहीं है। उनकी भाषा एक वर्णात्मक है अर्थात् शेमेटिक भाषा के मूल शब्दों में से बहुत से शब्द जैसे तीन वर्णों के जोग से बने है चीनवालों के मूल शब्द ऐसे नहीं हैं। किन्तु के-

बस एकही वर्णात्मक हैं। चीन की भाषा में क्रिया, गुण, और द्रव्य वाचक तीन प्रकार के पृथक पृथक शब्द नहीं हैं। उस में सब शब्द द्रव्यवाचक हैं। वे सब द्रव्यवाचक शब्द उच्चारण की विशेषता से कभी तो क्रिया वाचक, और कभी गुण वाचक होते हैं। इस भाषा को तुरानी भाषा की पुरानी अवस्था का रूप कह सकते हैं।

और एक प्रकार की मूल भाषा का नाम आफ्रिक है। इस प्रकार की भाषा आफ्रिका में प्रचलित है। इसकी प्रकृति सेमिटिक, और तुरानी इन दोनों से कुछ भिन्न है। लेकिन किसी किसी अंश में, इन दोनों के साथ आफ्रिक भाषा मिलती है। इस लिये पण्डित लोग आफ्रिक भाषा को इन दोनों प्रकार की भाषाओं के बीच की समझते हैं। प्राचीन मिस्र लोगों की भाषा आफ्रिक भाषा के अन्तर्गत समझी जाती है। आमेरिक जाति की मूल भाषा ऊपर कही हुई सब भाषाओं से भिन्न है, इसको बहुवर्णात्मक कहते हैं, इस लिये कि यद्यपि इस भाषा में विभक्ति का जोग नहीं देख पड़ता तौभी बहुत से मूल शब्दों को एकत्र मिलाके दूसरा अर्थ निकालना इस भाषा की प्रकृति मालूम होती है, यह भाषा अमेरिका के प्राचीन रहने वालों में प्रचलित थी। आज तक इस भाषा की प्रकृति अच्छी तरह से मालूम नहीं हुई है।

चौथा अध्याय।

अनेक देशों में मनुष्यों का संचार।

अगिले अध्याय में भाषाओं के भेद की जो व्यवस्था दिखलाई गई है, किसी प्राचीन जाति के इतिहास में उसका कोई साफ़ वर्णन नहीं है। "बाइबल" में लिखा है कि जलप्लावन के कुछ बरस बाद "नोआ के सन्तान "टाइग्रिस" और "यूफ्रिटिस" नदियों के बीच "सिनार" नाम किसी स्थान में जाकर वहां एक नगर और बड़ा कीर्तिस्तम्भ बनाने लगे। तब ईश्वर ने उन लोगों की भाषा जुदी जुदी बदल दी, इसीलिये वे लोग अलग अलग सम्प्रदाय बनाकर हर तरफ़ गये। इस प्रकार से मनुष्य लोग अनेक जातियों में बट गये। बहुत से लोग कहते हैं, कि यह बात ईशा के १९९६ (उनैस सौ छेयानवे) बरस पहले हुई थी। "बाइबल" ग्रन्थ को मूल प्रमाण मान कर और दूसरी प्राचीन जातियों के इतिहास की सहायता से आज कल के पण्डित लोगों ने यह ठहराया है, कि प्राचीन समय में आदमी लोग नीचे लिखी हुई चौहद्दियों के बीच के देशों में रहा करते थे। उत्तर "ककेशस्" पहाड़ और "मिडिया" पश्चिम "लिबिया" और "ग्रीस" और दक्खिन "इथियोपिया" या "हबश" इस के बाद हर पीढ़ी में आदमी लोग अपने रहने

की जगह चारों तरफ़ बढ़ाने लगी। इस तरह आज कल लोग सारी पृथिवी में फैलगये हैं। आदमियों के इतिहासों को देख भाल कर पण्डितों ने यह ठहराया है कि किसी भी देश का आदिम ठीक विवरण नहीं मिल सकता है। किसी एक देश को कहो उस देश का इतिहास देखने भालने से यही मालूम होगा कि आज कल जो लोग वहां बसते हैं, वहां उनके आने के पहले अवश्य किसी दूसरी जाति के लोग रहते थे। अगर उन पहली जातियों का कोई इतिहास मिले तो उस से भी मालूम होगा कि उन लोगों के भी पहले कोई प्राचीन जाति वहां रहती थी उन जाति यों का कोई इतिहास मिलता नहीं। केवल कहीं एक समाधि निशान, उन की भाषा के कुछ शब्द, या उन लोगों के बहुत भद्दे अस्त्र शस्त्र आदि रह गये हैं। लेकिन वेई लोग आदि निवासी उस देश के थे, इस में कोइ प्रमाण नहीं। पृथिवी में सब जगह यही हाल है। उसके कुछ उदाहरण देते हैं।

"आमेरिका" खण्ड बहुत थोड़े समय से जाना गया है, "कलम्बस" नाम एक प्रसिद्ध नाविक ने १४९२ बरस इसा के बाद पृथिवी के इस हिस्से को "युरोप" वालों को जनाया था। "युरोप" वालों ने "आमेरिका" में जाकर पहले पहल असभ्य और लाल रंग वाले "इण्डियन" लोगों को देखकर यह समझा था कि वे सब से पुराने वहां के रहने वाले हैं।

लेकिन उस के बाद उस देश की बहुत सी जगहों में बड़े बड़े किले, दिवार, और समाधि स्थान देख पड़े। 'इन्डियन' लोग कहते हैं कि ये सब चीजें देवताओं की बनाई हुई हैं। इससे यह मालूम होता है, कि "इन्डियन" लोगों के पहले भी किसी सुसभ्य जाति के लोग "आमेरिका" में रहते थे। उन के वंश के नाश होने के बाद "इन्डियन" लोग रहने लगे।

आज कल "युरोप" के पश्चिम और उत्तर प्रदेश में "जर्मन" लोग बहुत प्रबल हैं। उन के पहले वहां "केल्टिक" जाति के लोग रहते थे। "जर्मन" और "केल्टिक", ये दोनों "ककेसीय" जाति के लोग हैं, और उन की भाषा की प्रकृति इरानी भाषा कैसी थी। आज कल बहुत सी जगहों में इन दोनों जातियों के लोग सम्पूर्ण रूप से मिल गये हैं, लेकिन "केल्टिक" लोगों से भी पहले "युरोप" में दूसरी जाति के लोग रहते थे इस बात के बहुत से प्रमाण पाये जाते हैं। वे सब लोग "ककेसीय" न थे, लेकिन 'मोगल' जाति के थे।

'एशिया' में भी बहुत सी जगहों में ऐसी बात देख पड़ती है। हमारे देश के दक्खिन हिस्से में 'मोगल' जाति की कोई भाषा प्रचलित थी यह पहले ही कह आये हैं। आज कल भी जो सब असभ्य और 'चोयाड़' जाति के लोग जंगल और पहाड़ों में रहते हैं, वे भी 'ककेसीय' जाति के लोग नहीं हैं। लेकिन हिन्दू लोग ककेसीय जाति के हैं, इस से मालूम होता है कि

उन के आनेके पहले भी इस देश में मनुष्य रहते थे, पर इसका भी ठिकाना नहीं लग सकता है कि हिन्दु लोग कितने प्राचीन हैं।

'आफ़िका' की बहुत सी जगहों में 'ककेसीय' जाति के लोग देख पड़ते हैं। और उस खण्ड के सब से दक्खिन के हिस्से में जो 'हटेनटह्' लोग रहते हैं, वे भी 'मोगल' जाति के हैं। इससे यह अनुमान होता है कि पहले पहल 'मोगल' जाति के लोग वहां आये और उसके बाद 'ककेसीय' और युरोपीय' लोग वहां रहने लगे। इस विवरण के पढ़ने से यह मालूम होता है कि किसी भी देश का आदिम हत्तान्त यथार्थ नहीं मिल सकता है, पर इस से यह नहीं समझना चाहिये कि आदमी लोग पृथिवी में अनादि काल से रहते हैं। भूतत्ववित पण्डितों ने यह ठहराया है कि किसी समय में यह पृथिवी आदमियों के रहने योग्य नहीं। इस से यह निश्चय है कि उस समय के अनन्तर मनुष्य की सृष्टि हुई। पर उस समय को कितने दिन हुए यह ऐसी युक्तियों से ठहराना कि सब के मन में आजाय किसी प्रकार सम्भव नहीं।

दूसरा प्रकरण।

पहला अध्याय।

मनुष्यसमाज।

हमलोग लड़कपन से अपने प्रयोजनीय और सुखदाई पदार्थों से घिरे रहते हैं इस कारण अभ्यास के वश जान से नहीं जान सकते कि ये पदार्थ कितने यत्न और परिश्रम से बनते हैं। उन में से हर एक के बनाने में प्राचीन समय में मनुष्यों की कितनी विवेचना कितना परिश्रम और कितना समय लगा है उसका कुछ ठिकाना नहीं। देखो लोहा हमलोगों के बहुत काम में आता है। लेकिन अनेक जातियों के लोग बहुत दिनों तक लोहे का व्यवहार नहीं जानते थे। नमक जो ऐसे काम की चीज़ है कि जिस के बिना हमसबों के बहुत सी खाने की चीज़ें नहीं बन सकती हैं। बहुत देशों के लोग नहीं बनाने जानते थे। और किसी किसी देश के लोग ऐसे मूर्ख थे कि आग का भी व्यवहार नहीं जानते थे। उस समय उनकी कैसी अवस्था थी

अनुमान से कुछ जाना जा सकता है उसका कुछ विशेष वर्णन नहीं पाया जाता है। जब आदमी लोगों ने कुछ चतुर हो कर धनुष वाण आदि "ही एक अस्त्र बनाने सीखा और रहने को जगह बनाने जाना। और जब उन लोगों को यह भी मालूम हुआ कि कौन चीज़ खाने के योग्य है और कौन चीज़ नहीं और आपस में बात चीत करने के लिये एक प्रकार की भाषा बनी उसके बाद आदमियों की जो जो अवस्था होतीं गईं उनका कुछ वर्णन इतिहास में पाया जाता है।

बहुत से लोग इकट्ठे हो कर एकही बार बड़े बड़े राज्यों के शासन की रीति नहीं निकाली किन्तु पहले केवल एक एक वंश के लोग सब एक एक जगह रहने लगे। एक वंश के लोग अपने पिता या दूसरे किसी प्रधान आदमी की आज्ञा अनुसार काम किया करते थे। उस समय मनुष्य शीकार के द्वारा अपने दिन काटते थे और किसी एक जगह में घर बना कर नहीं रहते थे। लेकिन शीकार के द्वारा दिन काटना बहुत कठिन होता है। किसी किसी दिन शिकार की चीज़ नहीं पाने से उपवास करना पड़ता है। और बार बार ऐसी बात होने से आदमी लोगों को इसका उपाय खोजना पड़ता है और तब यह बात अनायास मन में आती है कि कुछ पशुओं को पाल रखने से लोग ऐसे कष्ट से बच सकते हैं। इस प्रकार आदमी लोग पशुपालने सीखते हैं। इस प्रकार से मनुष्य अपने

अपने वंश के सरदार के अधीन रह कर इधर उधर घूमा करते हैं। इस लिये उनकी शासन रीति को कुलतंत्रता अर्थात् कुल बंदेज कह सक्ते हैं।

पशुओं के पालन से जितने लोग अपने दिन काट सक्ते हैं उन से अधिक लोग खेती बारी करने से जी सक्ते हैं। देश और प्रकृति के भेद से यह ज्ञान किसी किसी जाति के लोगों में शीघ्र हो जाता है। और इस कारण वे लोग दूसरी जगह घूमा नहीं करते पर किसी उपजाऊ जगह में रहने लगते हैं। इस अवस्था में पहले लोग कुल तंत्रता के अधीन रहते हैं। पर बहुत सी जगहों में ऐसी अवस्था जल्द बदल जाती है। किसी एक वंश के लोगों की संख्या बढ़ जाने से या बहुत प्रबल और बहुत दुराभिलाषी होने के कारण वे दूसरे वंश के मनुष्यों पर चढ़ाई करते हैं और उनको हरा कर अपने अधीन करलेते हैं। इस तरह से तीन चार वंश के लोग एकत्र होने पर उनका सरदार राजा कहलाने लगता है। इसी तरह से आज कल के बड़े बड़े राज्य बने हैं। इस अवस्था में राजालोग लड़ाई के द्वारा बहुत लाभ देख कर सदा लड़ाई में लगे रहते हैं। इस लिये राज्य सब धीरे धीरे बढ़ते जाते हैं।

अधिक रहता है। आजकल की यूरप वालों में यही हाल है। उन यूरपवालों की दसा भी ऐसी ही है जो अमेरिका में रहते हैं। पृथ्वी के और किसी हिस्से में ऐसा नहीं हुआ है। यूरप ही में सब प्रजा लोगों का अब तक विशेष सनमान नहीं हुआ। जब तक सब प्रजा ज्ञान और धन में बड़ी न होंगी तब तक ऐसा होना असंभव है। आदमियों की शासन रीति के बारे जो कुछ कहा गया है उससे यह मालूम होगा कि जैसे आदमी लोग लड़कपन में अपने मा बाप के द्वारा पाले जाते हैं और जब अवस्था अधिक होती है तब स्वाधीन हो जाते हैं। मनुष्य समाज में भी ठीक ऐसा ही हो जाता है जब तक मनुष्यों की असभ्य अवस्था रहती है तब तक कुलपति राजा पुरोहित या ज़िमीदार लोग उन पर अधिकार करते हैं। पर ज्यों ज्यों प्रजा के लोग विद्या और बुद्धि पाते हैं त्यों त्यों स्वतंत्र होते जाते हैं। सच पूछो तो विद्या ही बल है समाज में जो लोग बहुत विद्वान होते हैं उन्ही लोगों के हाथ में राज्य का अधिक भार रहता है। इस नियम के विरुद्ध कभी नहीं हो सका है। जब कहीं ऐसा होता है तो वहां बड़ा उपद्रव उठता है।

शासन की रीति का इतिहास देखने भालने से और एक बहुत आश्चर्य नियम देख पड़ता है कि सब समाजों में भिन्न भिन्न मत के लोगों के कै एक दल रहते हैं। राजा और राजकर्मचारियों का एक दल, और पुरोहितों

का दल उन लोगों से भिन्न। और कुलीन भूस्वामी लोग इन दोनों दलों से अलग। और धनी प्रजा इन तीनों दलों से भिन्न। साधारण प्रजा के लोग इन चार दलों में से किसी में सम्पूर्ण रूप से नहीं मिल सकते। इन सब दलों का मत आपस में एक नहीं है। सब अपने अपने हाथ में सदा राज्य की शक्ति अधिक लेने चाहते हैं। पर इससे समाज का काम अच्छी तरह से चलता है। कोई मनुष्य प्रबल हो कर दूसरे पर अत्याचार नहीं कर सक्ता है और जो कोई करे तो उसका फल उसको शीघ्र ही मिलता है।

इस तरह विचारने से मनुष्य समाज को एक रूई की तराजू के समान समझ सकते हैं। जैसे रूई की तराजू की एक एक तरफ़ का बोझ अपनी ओर को झुकाने चाहता है उसी तरह हर समाज के लोग अधिक शक्ति लेने की इच्छा करते हैं। लेकिन जैसे रूई की तराजू की दोनों तरफ़ से खींचावं हो जाने के कारण डंडी तुली रहती है उसी तरह सब दलों के लोग अपनी इच्छा के अनुसार करने के यत्न करने से समाज की अवस्था को एक तरह रखते हैं। राजनीति जानने वाले पण्डित लोगों ने इस नियम को 'सामाजिक समान अवस्था का नियम' कहा है। व्यवस्थापक लोगों को इस नियम के अनुसार व्यवस्था करना उचित है। जो ऐसा न करें तो व्यवस्था में दोष पड़ जाय और उसी दोष के कारण याती समाज एक दम से कम ज़ोर पड़ जाय या उस दोष को दूर

करने के लिये बतला गये। जितने दिन तक वह दोष दूर हो कर फिर साम्यावस्था नहीं हो तब तक समाज का काम अच्छी तरह से नहीं चले।

तीसरा अध्याय।

व्यवस्था यानी क़ानून।

जो सब मनुष्य जितेन्द्रिय और धर्म परायण होते तो चैन से दिन काट सक्ते। कोई किसी पर किसी प्रकार का अत्याचार न करता। इस लिये किसी प्रकार के शासन का भी कोई काम न पड़ता। जो आदमी विद्या और वय में बड़ा होता उसी के मत के अनुसार समाज का सब काम चलता। और अपने अपने काम करने में भी किसी आदमी को किसी प्रकार के शासन के अधीन न रहना पड़ता। लेकिन मनुष्य की प्रकृति ऐसी शुद्ध नहीं है। सब अच्छी प्रकार से शिक्षा न पाने के कारण आप स्वार्थी हो जाते हैं। लड़कों के स्वभाव में यह बात खूब देख पड़ती है। उनके मन में नेक बातों के अनेक चिन्ह जैसे पाये जाते हैं वैसे ही स्वार्थपरता का लक्षण भी देख पड़ता है। इसी से शासन की आवश्यकता देख पड़ती है। मनुष्य समाज की पहली अवस्था में जब एक एक वंश के लोग एकत्र रहते तब उस परिवार का सरदार शासन करता

है। और सब उसी के वस में रहते हैं। अपने परिवार पर उसका स्वाभाविक स्नेह रहने के कारण शासन की कारवाई पक्षपात रहित होती है। और सब लोग सुख चैन से रहते हैं। लेकिन जब वंश के लोग बढ़ जाते हैं तब कुलतन्त्रता का समय आता है और कुलपति लोग अपनी अपनी इच्छा और बुद्धि के अनुसार हुकूमत करते हैं। उसी समय से एक प्रकार की व्यवस्था प्रचलित होती है। कोई बड़ा मानो कुलपति जिस विषय में जिस प्रकार के विचार कर जाता है वे विचार लोगों के मन में रह जाते हैं। उसके बाद वैसे ही विषय आपड़ने से ठीक उसी प्रकार के विचार करने पड़ते हैं वैसा नहीं करने से निन्दा होती है और लोग असन्तोष प्रकाश करते हैं। इस प्रकार व्यवस्था धीरे धीरे ठहरती जाती है। और कवि लोग उन सभों को छन्द बद्ध करते हैं। लोग जहांतक सकते हैं उन्हें स्मरण कर रखते हैं। इसके बाद जब लिपि की सृष्टि होती है तब सब से पहले उन सब व्यवस्थाओं का विवरण लिखा जाता है। जिस महात्मा के द्वारा जिस किसी देश की व्यवस्था पहिले लिखी जाती है वह उसका व्यवस्थापक कहा जाता है। हमारे देश में व्यवस्थापकों को संहिताकार कहते हैं। बहुत से प्राचीन लोगों की संहिता पाई जाती हैं। देश भेद और उस समय में लोगों की अवस्था भेद के कारण से उन संहिताओं की भी प्रकृति भिन्न भिन्न हैं। लेकिन किसी किसी विषय में उन की

रखता है। इन सब बातों को विवेचना करके देखने से आदमी लोगों की कैसी अवस्था में किस प्रकार की व्यवस्थायें प्रचलित होती हैं कुछ जाना जा सकता है। इस लिये उस का कुछ संक्षेप वर्णन किया जाता है।

सब व्यवस्था प्राचीन समय से परम्परा उपदेश के तौर पर अनेक पीढ़ियों से चली आती हैं। इसलिये व्यवस्थापक लोग यह विश्वास सहज ही करा सकते हैं कि ये सब व्यवस्था ईश्वर की बनाई हुई या ईश्वर के अनुग्रह से कैएक महात्माओं की बनाई हुई हैं। उन लोगों ने अपने ग्रंथों में केवल लौकिक व्यवस्था के नियम नहीं लिखे हैं किन्तु पारलौकिक धर्म्म का उपदेश भी दिया है। इस लिये सब व्यवस्थाओं को धर्मशास्त्र मूलक समझ कर लोग बहुत आदर करते हैं। पर एक प्रकार के नियम सब समय में नहीं चल सकते हैं। देश की अवस्था भेद के अनुसार व्यवस्था को भी बदलना पड़ता है। जैसे बचपन के कपड़े युवा अवस्था में पहरे नहीं जा सकते हैं वैसे ही मनुष्य समाज बढ़ने पर और लोगों के नाना प्रकार के व्यवसाय अवलम्बन करने पर पहली अवस्था के नियम के अनुसार सब काम नहीं चल सकते हैं। इस तरह सब व्यवस्था बदला करती हैं। व्यवस्था शास्त्र दो हिस्सों में बांटे गये हैं। एक हिस्से में धर्म्म के कामों का विवरण और दूसरे में लौकिक व्यवहारों का वर्णन किया है। सब देशों के धर्म्मशास्त्र इस तरह से आचार अध्याय और व्यवहार अध्याय में बांटे गये हैं।

जंगली दशा में काम की चीजों का बहुत अभाव रहता है। और उन सब चीजों को एकट्ठा करने के लिये लोगों को जी पर खेलके काम करना पड़ता है। इसे सदा अकाल मृत्यु होती है। इस दशा में आदमियों का जीवन कैसा अमूल्य है यह अच्छी तरह से मालुम नहीं रहता। इस अवस्था में आदमियों का धन-हरण करना और प्राणनाश करना ये दोनों एक समान गिने जाते हैं। प्राचीन समय की व्यवस्था से यह पाया जाता है कि दूसरे के धन हरने या जान मारने में में कुछ अधिक प्रभेद नहीं था। दोनों प्रकार के दोषों के लिये समान दंड था वरन कभी कभी साहस कर्म से धन अपहरण का दंड अधिक होता था। किसी किसी देश की आइन मे यह लिखा था कि फलाने पद के आदमी को मारने से इतना रुपया दंड देना पड़ेगा। और ऊंचे पद के आदमी को मारने से उसका दूना या तिगुना देना होगा। लेकिन जब आदमियों की सभ्यावस्था यानि शाइस्तिगी होती है तब ऐसी बुरी व्यवस्था प्रचलित नहीं रह सकती। तब धन विषयक अपराध का दंड एक प्रकार का होता है और शरीर विषयक अपराध का दंड दूसरे तौर का होता है। इस तरह से व्यवहार कांड भी दो भागों मे बंटे हैं। एक का नाम दीवानी आइन और दूसरे का नाम फौजदारी आइन है। व्यवहार अध्याय इस तरह से बांटे जाने पर भी इन दोनो प्रकारों के आइन के दंड कुछ दिन तक बराबर थे। एक दम से अब

बदल नहीं गये थे। यह मालूम होता है कि फौजदारी की आइन का दंड बदला लेने के लिये बने थे। किसी अपराध मे हाथ काटना किसी में पैर काटना किसी में आंख निकालनी और किसी में जलाना इत्यादि भयानक दंड प्रचलित थे। दीवानी के दंड भी इस तरह से कठिन होते थे। जो आदमी कर्ज लेकर अदा नहीं कर सकता था तो महाजन उस के शरीर को भी बेच सकता था। और कहीं कहीं ऐसी आइन थी कि अगर कोई अपने लड़के को जान से मारडाले तो उसका कुछ दोष नहीं होता था।

लेकिन धीरे धीरे आइन के ये सब दोष दूर हो जाते हैं। राज कर्म्मचारी जमीदार और पुरोहित लोगों ने पहले केवल अपने को आइन के विशेष विशेष दंडों से रक्षित किया था। उस के बाद प्रजा साधारण के लिये कोई कोई नियम बदल दिये गये। समाज की शासन प्रणाली जितनी अच्छी होती है और आदमियों का भला बुरा ज्ञान जितना प्रबल होता है उतना ही आइन भी सुधर कर अपराधी से बैर लेने की इच्छा दूर करती है। और तब केवल इसी की चेष्टा रहती है जिस से अपराधी का दुष्ट स्वभाव सुधर जाय। आज तक किसी देश मे यह बात अच्छी तरह से नहीं हुई है। पर यूरप के किसी किसी देश में प्राण दंड की विधि एकदम से उठा देने का सामान हुआ है। इससे यह अच्छी तरह मालूम होता है कि

अवस्था भेद के कारण से आइन को प्रकृति किस प्रकार बदली है।
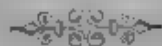
चौथा अध्याय।

शिल्प-यानी कारीगरी।

जैसे आदमियों की व्यवस्था और शासन-प्रणाली आदि को देखने भालने से यह मालूम होता है कि किस देश के लोगों की कैसी अवस्था हुई है वैसे ही शिल्प विद्याकी उन्नति पर ध्यान देने से आदमी लोग कहां तक सभ्य हुए हैं जाना जा सक्ता है। शिल्प तत्त्ववित पण्डितों ने इस विषय में जो कुछ कहा है उसका संक्षेप वर्णन इस अध्याय में करेंगे। पहले मकान बनाने की कारिगरी की प्रणाली के विषय में कुछ लिखें गे।

प्रायः सब प्रकार के जीव अपनी स्वाभाविक समझ से अपने अपने रहने की जगह बना सक्ते हैं। पक्षियों के खोते रहते हैं। हिंसक पशु अपनी मांद में जा विश्राम करते हैं। चुंटी आदि छोटे छोटे जीवों का भी रहनेका स्थान रहता है। मनुष्य लोग भी पहले इसी तरह रहने की जगह अवश्य तैयार करते

रहे। देशों के भिन्न भिन्न स्वभाव के अनुसार कहीं तो पृथ्वी के ऊपर और कहीं पृथिवी के अन्दर जंगली आदमी लोग रहा करते रहे। सर्द देशों मे मनुष्य लोग पृथिवी में गड़हा खोद कर रहते रहे। और गर्म देशों में वृक्षों के तले या उसके ऊपर रहते रहे। "युरोप" में कहीं कहीं इन सब गड़हों के चिन्ह आज तक पाये जाते हैं इन सभों का मुंह पत्थर से बंद रहता है। बाहर निकलने और भीतर आने के लिये केवल एक छिद्र मात्र रहता है। गड़हों के अन्दर जली लकड़ी का कोयला देख पड़ा है और पत्थर या हड्डी के मुंहवाले तीर भी कहीं कहीं पाये गये हैं। इससे इसमें कुछ सन्देह नहीं है कि वे आदमियों के रहने की जगह थीं। इन सब गड़हों में जो सब अस्त्र पाये गये हैं सो पत्थर के बने हुये हैं। उन में से एक भी धातु का बना नहीं है और ऐसा कोई चिन्ह भी नहीं पाया जाता जिससे मालूम हो कि उस समय के लोग किसी प्रकार धातु का व्यवहार जानते थे। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि उस प्रकार के गड़हे एक एक जगहों में बहुत से देख पड़ते हैं इससे यह मालूम होता है कि उस समय में भी आदमी लोगों का एक प्रकार का समाज था। इसलिये उस के पहले ही भाषा बनने का प्रथम आरम्भ हुआ होगा। उसके बाद जो सब रहने की जगह बनी थीं उन की बनावट पहले से कुछ भिन्न थी। उस समय में भी मनुष्य लोग मांदों में रहा करते थे। लेकिन तब गड़हा खोद कर उस

का मुंह एक दम से बंद नहीं करते थे पर उस की चारों तरफ बड़े बड़े पत्थर रख कर उस के ऊपर एक प्रकार की छत तैयार करते थे इस लिये गड़हे में आने जाने की राह भी कुछ पहले से बड़ी रहती थी। उन सब गड़हों के अन्दर जैसे हड्डी और पत्थर के बनाये हुये अस्त्र पाये जाते हैं वैसे ही पीतल के बनाये हुये अस्त्र आदि भी देख पड़ते हैं। इससे यह बात मालूम होती है कि उस समय के लोगों ने किसी किसी धातु का व्यवहार जाना होगा। मालूम होता है कि उसके थोड़े ही दिनों के भीतर आदमियों को हिंसक पशुओं का डर कम हो गया था और लोग झुंड के भीतर रहना छोड़ बाहर कुटी आदि बना कर रहने लगे थे। उस समय के मकान और देवालयों के टूटे फूटे टुकड़े जो अब तक रह गये हैं उन्हे देखने से साफ मालूम होता है कि उस समय के लोग लोहे के काम को जान गये थे।

सब जातियों के लोगों को उन दोनों अवस्थाओं के बाद तीसरी में पहुंचना होता है। लेकिन जिस देश का जल और वायू अच्छी है और भूमि उपजाऊ है वहां थोड़े दिनों में जंगली दशा बीत जाती और सभ्यावस्था आती है। अगर वह देश पृथिवी के ऐसे स्थान में हो जहां विदेशी लोग आसानी से आवागमन कर सकें तो भिन्न भिन्न जातियों के लोगों के परिचय होने के कारण बहुत जल्द अनेक विषयों का ज्ञान हो सकता है वह देश सब के पहिले सुसभ्य होजाता है। "एशिया" के जिस भाग से दूसरे देशों में मनुष्यों की

संधार होने की कथा प्रसिद्ध है उस भाग में ऊपर लिखी हुई बातें पाई जाती हैं। इस से यह निश्चय है कि वहां के लोग सब के पहले सुसभ्य हुए होंगे। "भारतवर्ष" "आसिरिया," "बेबिलन," "मिसर," "निउबिया" और उस के निकट के और सब देशों में जो प्राचीन इमारतों के चिन्ह देख पड़ते हैं वे बहुत आश्चर्य और मनोहर हैं। उन में से किसी में पत्थर या पीतल के बनाये हुए मूर्त्तों के चिन्ह देख पड़ते हैं। इन से भी उन चीजों के बनाने वालों को प्रकृति, शिक्षा, बुद्धि, धर्मज्ञान अच्छी तरह से समझ सकते हैं। पर इन का विशेष विवरण लिखने से बहुत बढ़ जायगा इस लिये केवल उनका सामान्य लक्षण और कैएक मकान बनाने की प्रणाली लिखी जाती है।

मिसर लोगों की इमारत की रीति।

ऊपर लिखी हुई सब जातियों के मकान बनाने की रीति एकही प्रकार की वर्णन की गई है। और आज कल "आमेरिका" के मध्य भाग में जो सब टूटे हुए कोठों के चिन्ह देख पड़ते हैं वे सब भी इसी किस्म के मकान समझे जाते हैं। इस में कुछ भी सन्देह नहीं कि गृहनिर्माण का यह प्रकार सब से प्राचीन है। "मिसर"

देश में इसके बहुत चिन्ह पाये जाते हैं। इसलिये इस का नाम "मिसरीय" कहा जाता है। "यूरोप" के "सिसिली" और "ग्रीस" में जो बड़े बड़े गिरे पड़े खंडहर हैं और जिन को कोई "साइक्लोपिक" अर्थात् असुरों का बनाया कहते हैं, वे सब यह रचना जाननेवाले पण्डितों के मत से इस प्रकार की बनावट के समझे जा सकते हैं।

मिसर वालों के महल में के एक विशेष बातें देख पड़ती हैं। (१) पहले इस में दीवार नीचे की तरफ़ बहुत मोटी और ऊपर के भाग में कुछ पतली रहती हैं (२) दूसरे छत सब बराबैर समछट रहती हैं, और इतने बड़े बड़े पत्थरों से पटी रहती हैं कि उनके नीचे कड़ियों की ज़रूरत नहीं रहती। पत्थर एक दीवार से दूसरी दीवार तक या एक खम्भे से दूसरे खम्भे तक रहते हैं। (३) तीसरे खम्भे बहुत मोटे छोटे और बहुत चिन्हों से कटे और चित्र खुदे हुये रहते हैं। (४) चौथे नक्काशी या खोदाई का शिल्प अर्थात् कारीगरी भी घर की किसी किसी जगहों में की रहती है। (५) पांचवे कहीं कहीं पहाड़ खोद कर उस में इस तरह के मकान बने रहते हैं।

पण्डितों ने कहा है कि जो लोग पहले पहाड़ के खोह में रहते थे और उसके बाद मिट्टी के मकान बनाने लगे, वे ही लोग शिल्प विद्या में निपुण हो कर ऐसा मकान बनाया करते हैं। पण्डित लोग यह भी कहते हैं कि मिट्टी की दीवार और खम्भे का नमूना उतारने से मकान इसी तरह का

बन जाता है। और पहाड़ के खोह में रहने के समय प्रयोजन के अनुसार खोह को प्रशस्त बनाने की जब इच्छा होती है; तब उन लोगों को मूर्त्ति आदि के लिये स्थान बनाने की इच्छा भी होती है तो वे लोग पहाड़ ही को खोद कर देवालय आदि बनाते हैं इस में कुछ अचरज नहीं।

यूनानी मकान का प्रकार।

यूनानी लोगों ने मिसर वालों से सब बातों की शिक्षा पाई थी। उन लोगों ने मिसर वालों से मकान बनाने की विद्या को भी सीखा था, लेकिन उन लोगों ने अपनी बड़ी बुद्धि से थोड़े ही दिनों में इस विद्या में ऐसी उन्नति की कि मिसर वालों ने वैसी कभी नहीं की थी; पहले वे लोग दीवारों को समतल बनाते थे, और खम्भों पर दूसरे किसी प्रकार की चित्रकारी के बदले केवल सरल रेखा भर खींचते थे। वे पहले ही से खम्भों को कुछ बड़ा बनाने लगे थे, लेकिन पहले चौड़ाई के चौगुने से अधिक लम्बा नहीं बनाते थे। इस प्रकार की यह रचना को "डोरीय" कहते हैं। इस के कुछ दिन बाद यूनानी लोग खम्भों की लम्बाई, चौड़ाई से ८ या ९ गुनी बनाते थे, और खम्भों के नीचे चौकोर

चौड़ी और ऊपर मोड़दार काम बनाते थे। इस में संदेह नहीं कि ऐसा करने से महल बहुत सुन्दर देख पड़ता था इस को "आइओनीय" प्रकार कहते हैं।

मिसर वालों के तीसरे प्रकार के मकानों के खम्भे अपनी चौड़ाई से १०गुने लम्बे होते थे और उनकी कुरसियों की बनावट विचित्र होती थी। और उनके ऊपर का हिस्सा पत्ते वाले पौधे की फुनगी सा होता था। इस प्रकार को "कोरिन्थीय" कहते हैं।

यूनान देश बहुत रमणीय है। यहां तूफ़ान और वृष्टि का उपद्रव नहीं होता, यहां साल भर प्रसन्न ऋतु रहती है, इस कारण मकान के दरवाज़े बहुत बड़े होते थे। नाच घर आदि साधारण समागम घरों में छत नहीं रहती थी, और देवालयों की चारों तरफ़ सुन्दर खम्भे देख पड़ते थे। इस लिये आश्चर्य नहीं कि उनके मकान देखने में बहुत अच्छे लगते होंगे। लेकिन तअज्जुब यह है कि यूनानियों के मन का भाव जब जैसा होता था उस समय में उनके मकान भी ठीक वैसे ही बनाये जाते थे अर्थात जब यूनानियों की यड़ती थी तब उनके मन में दृढ़ता, उदारता, और सरलता, गुण अधिक थे, उस समय में उनके मकान भी बड़े मज़बूत "डोरीय" तौर के बनते थे। जब उन लोगों ने प्रबल फ़ारसी लोगों को सम्मुख की लड़ाई में जीत कर अपने बल विक्रम को अच्छी तरह से जान लिया और काव्य रसके रसिक

हुये तब सुन्दर "आइयोनीय" तौर के मकान बनाने लगे। और जब वे लोग चारों तरफ जय करके बहुत धनी और ऐश्वर्य्य हुये तब नाना अलंकार वाले "कोरिंथीय" महल के प्रकार का आदर करने लगे। यूनानवालों ने इस विद्या में जितनी उन्नति की थी पृथिवी में आज तक किसी जाति के लोगों ने उससे बढ़ कर नहीं की है; लेकिन देश भेद के कारण से गृह के प्रकार भी बहुत तौर के हैं। उन में से कई प्रधान प्रकारों का वर्णन संक्षेप से किया जाता है।

चीन वालों के मकान का प्रकार।

यह पहले ही कहा गया है कि चीन देश के लोग मोगल जाति के हैं। ये लोग चीन देश में बसने के पहले आज कल के "तातार" लोगों की तरह मवेशी चराते हर जगह फिरा करते थे। उस समय में वे लोग कपड़े या चमड़े के तम्बुओं में रहते थे। इस लिये जब वे चीन देश में स्थायी हो कर रहने लगे और मवेशी पालना छोड़ कर खेती करने लगे तो लकड़ियों का ठीक तम्बू सा मकान बनाने लगे। उनके मकानों की सूरत आज तक वैसी ही है। सफर करनेवाले लोग कहते हैं कि

दूर से चीन वालों के नगरों को देखने से यह मालूम होता है कि कै एक तम्बू एकट्ठे खड़े हैं। जैसे कपड़े की चांदनी तानने से बीच में नीची और चारो ओर ऊंची देख पड़ती है चीनी लोगों के मकानों की छत भी ठीक वैसी ही देख पड़ती है। मोगल जाति के लोगों में नकल उतारने की बान क्या ही प्रबल है देखो हजारों बरस हुए कि चीन वाले सभ्य हुए तौभी अपने जंगली पहले लोगों का तम्बू न भूल सके, आज तक काठ का तम्बू बना कर उस में वे रहा करते हैं।

गाथिक लोगों के मकानों का प्रकार।

अनुकरण यानी नकल उतारना ककेशीय लोगों में भी देख पड़ता है। अनुकरण करना आदमियों का स्वाभाविक धर्म्म है पर विशेष यह है कि ककेशीय लोग धीरे धीरे सब बातों में जिस तरह से उन्नति करते हैं मोगल लोग उस तरह नहीं कर सकते। "यूरोप" के "टिउटन" जाति के लोग आज कल सुसभ्य और क्रस्तान हैं। पहले वे लोग जंगली थे और पत्तों के मंडयों में बैठ जड़ पदार्थों की उपासना करते थे। इस लिये कोई कोई कहते हैं कि जब उन लोगों ने क्रस्तान हो कर गिरजा बनाना आरम्भ किया तो इस में आश्चर्य

नहीं कि उनके गिरजे भी वन की चीजों के समान बनते रहे हों। वन में वृक्ष की शाखा आपस में मिल कर जैसी मालूम होती हैं उनके गिरजा घर भी वैसे ही देख पड़ते थे "गाथिक" गिर्जों का मेहराब ठीक गोल नहीं होता। मेहराब के मध्य स्थान में एक एक कोन रहता है, और बाहर की तरफ़ दीवार सब, वृक्ष की तरह धीरे धीरे पतली होकर सूई की नोकसी मालूम होती है। इस तरह के गिर्जों के दरवाजों में जो शीशे रहते हैं उनपर रंग बरंग को चित्रकारी होने से अन्दर रोशनी अच्छी तरह से नहीं जा सकती। वनके अन्दर भी रोशनी अच्छी तरह नहीं जाती है, इससे यह भी उसी का अनुकरण मालूम होता है।

मुसलमानों के मकानों का प्रकार।

जैसे "यूरोप" में प्राचीन यूनान वाले सबसे चतुर होते थे। "एशिया" में अरबवाले भी वैसे ही होते थे। वे लोग पहले तंबू में रहा करते थे, इस के बाद मुहम्मद के मुसलमानी धर्म्म को ग्रहण कर एक बारगी बहुत प्रबल और धर्म्म परायण हो गये। ये लोग नाना देशों को जीत कर बहुत धनी हुए। तो इस के बाद ये लोग

जो मकान बनाते थे वे चीनवालों की तरह तम्बू के ऐसे नहीं होते थे, लेकिन यूनान वालों के मकानों से बहुत मिलते थे। पर फरक़ यह था कि घोड़े के सुम की तरह वे मिहराब बनाते थे, और जैसे तम्बू का भितरी हिस्सा फूल बूटों से शोभायमान होता था वैसे ही दीवार में भी हर तरह की चित्रकारी करते थे। तम्बू का जोड़ बांसों विष्कम्भ जैसा सूक्ष्म होता है वैसे ही उनके मकानों के खम्भे भी अधिक पतले होते थे।

इस के सिवाय "रूमीय" "रसकान" "बाइजान्टीय" आदि भी एक मकानों के प्रकार हैं। लेकिन वे सब प्रायः यूनानी प्रकार के अनुकरण हैं। इस सिलेबस के विशेष वर्णन का कुछ प्रयोजन नहीं है। जो कहा गया है उस से यह मालूम होगा कि आदमियों के मकान बनाने की शिल्प विद्या किस प्रकार से शुरू हुई और उस के बाद किस तरह से उस की उन्नति होती गई। और सब प्रकार के शिल्प मनुष्यों के बनाये हुए हैं। इस में कुछ सन्देह नहीं कि आदमियों का जब जैसा ज्ञान और स्वभाव होता है उन के बनाये हुये शिल्प में भी तब वैसी ही उन्नति होती है।

पांचवां अध्याय ।

शिल्प और विद्या ।

सब देशों में पहले पहल कविता की पैदाइश होती है। पुराने समय में केवल कविलोग धर्म शास्त्र, दर्शन शास्त्र, भूगोल, और इतिहास जानने वाले होते थे। और वे लोग साधारण लोगों को उपदेश किया करते थे। उन के बनाए हुए ग्रन्थों का लोग बड़ा आदर करते थे। उन से धर्म शास्त्र की विधि, लोक के व्यवहार की रीतें, और इतिहास के बहुत से प्रमाण जाने जाते थे। और वे सब कविता केवल आज कल के ग्रन्थ की तरह नहीं पढ़ी जाती थीं। पहले कविलोग या उन के शिष्य सब कविताओं को सुर और लय के साथ पढ़ा करते थे। इस से कविता और संगीत विद्या की चर्चा एक साथ फैली। ऐसी कोई असभ्य जाति न थी कि जिस में कुछ न कुछ संगीत और काव्य की चर्चा नहीं देख पड़ती हो। इस लिये इन दोनों को भाषा के सहोदर भाई

कह सकते हैं। काव्य और संगीत की कुछ तरक्की होने पर ज़रूर चित्रकारी की विद्या प्रगट होती है। और चित्रकारी विद्या के साथ नक़्क़ाशी के शिल्प यानी हुनर की उन्नति होती है।

जब तक ज्ञान धर्म भयानक रहता है तब तक नक़्क़ाशी के काम अच्छी तरह से जारी नहीं होते, लेकिन जब कवि लोग रूपक अलंकार के द्वारा अपने मन के भावों के रूप कल्पना करते हैं, तब कारीगर लोग उन सब कल्पित रूपों की सूरत आदि देखाने का यत्न करते हैं। इस कारण से शिल्प के कामों का मान बढ़ता है। पदार्थों का ठीको ठीक चित्र उतार देने ही से शिल्प की बड़ाई नहीं समझी जाती है लेकिन तसवीर या पत्थर की मूर्ति ऐसी बने कि मन का भाव ज़ाहिर करे तो शिल्प का काम पूरा होता है। पुरानी जातियों में ग्रीक लोग इस विषय में सब से बढ़ चढ़ गये थे। वे लोग जैसे मकान बनाने की कारीगरी में भाव प्रकाश कर सकते थे, चित्र और नक़्क़ाशी के कामों में भी वैसा ही भाव ज़ाहिर कर देते थे। इन सब बातों में ग्रीक लोगों से आज तक किसी देश के लोग नहीं बढ़ सके हैं। आजकल की सुसभ्य जातियों में शिल्पविद्या की बड़ी चाह देख पड़ती है। उन लोगों में जो शिल्प नहीं जानते उन को मूढ़ समझते हैं। उन लोगों ने शिल्प के अनेक भेद ठहराये हैं उन सभों का यहां वर्णन नहीं कर सकते, केवल इतनी बात कह सकते हैं कि काव्य की चर्चा कम होने पर नक़्क़ा-

विज्ञान व्याकरण शास्त्र की चर्चा अधिक होती है,उस समय अलंकार शास्त्र आदि के पण्डित लोग प्रगट होते हैं। उस के बाद इति हास लिखने का समय आता है, उस समय में वह पदार्थतत्त्व विद्या भी जिस का मूल प्रत्यक्ष प्रमाण है प्रारम्भ होती है। पदार्थ तत्त्व की चर्चा होने से नाना प्रकार की विषयों के कामों का ज्ञान होता है, और सब लोगों में विद्या की चर्चा फैलती है।

छठा अध्याय।

युद्ध।

पुराने समय में आदमी लोग लड़ाई में लगे रहते थे। जितने ही पुराने समय का इतिहास देखा जाता है उतनी ही लोगों की चाह लड़ाई में अधिक पाई जाती है। जंगली दशा में जीविका पाना कठिन रहता था, इसलिये जब कोई काम की चीज़ किसी दूसरे आदमी के पास रहती थी तो जंगली लोग उस आदमी को मार कर उस चीज़ को लेने का यत्न करते थे, उस समय में राज की रीति अच्छी न थी और देश भी बड़ा न था, इस लिये हर एक वंश और समाज में सदा इस तरह की लड़ाई होने का मौक़ा पड़ता था। जो एक बार किसी कारण से दो वंशों में लड़ाई हो जाती थी तो वे एक पीढ़ी तक मन मोटाव आपस में रहता था। जब तक एक

तरफ के लोग जड़मूल से बर्बाद न हो जाते थे तब तक दूसरी तरफ वाले चुप नहीं बैठते थे। जब राज्य का प्रबंध अच्छा नहीं रहता है तब शत्रुओं से बदला लेना एक बड़ा धर्म गिना जाता है। मालूम होता है कि आदमी लोग पहले पत्थरों से पशुओं का अहेर और आपस में लड़ाई करते थे। उस समय में दूसरे हथियार काम में नहीं लाये जाते थे। इस के बाद धीरे धीरे लाठी, पत्थर या काठ की कटारी और तीर कमान आदि काम में लाने लगे थे। उसी समय में जानवरों की खाल चमड़ी से लोग अपने बदन को ढाकने लगे थे। पर मनुष्य समाज की ज्यों ज्यों उन्नति होती जाती है त्यों त्यों लड़ाई के हथियार भी अच्छे बनते जाते हैं। क्योंकि तब ज़मींदार लोग धनी होकर बखतर वगैरह शरीर का बचाव करने वाली चीजें बनवा सके हैं। और हाथी घोड़े भी रख सकते हैं, लेकिन जब सब लोग दुखिये और गरीब रहते हैं तब इतना धन नहीं खरच कर सकते हैं। लड़ाई को उस समय में लोग व्यवसाय समझते थे। ज़मींदार लोग और कोई काम नहीं करते थे, पर वे लड़कपन से ऐसी बातें सीखते थे कि जिससे शरीर का बल बढ़े हथियार के काम में निपुण हों, और हाथी घोड़े को अच्छी हांक सकें। इस लिये यह आश्चर्य की बात नहीं कि वे लोग उन सेनाओं को लड़ाई में हरा देते थे जो अशिक्षित और दुर्बल होती थीं और जिन के पास हथियार तक न रहता था। यह मालूम होता

है कि इसी लिये सब देशों की प्राचीन कविताओं में ऐसे युद्धों का बयान कि एक वीर ने हजारों को मार भगाया देखा जाता है। अगर यह मान लिया जाय कि सब कविताओं में बहुत सी झूठी बातें भी हैं तो भी यह नहीं मान सकते कि यह बयान बिलकुल ही झूठ है। उस समय एक रथी बहुत से पैदलों को मार सकता था यह बात और ही भांति झूठ नहीं है। जो सब देश बड़े और चौरस खेत के ऐसे थे उन देशों में रथ और हाथियों का बहुत अधिक व्यवहार था। जिन सब देशों की ज़मीन ऊंची नीची थी वहां के लोग घोड़सवारी में निपुण थे। "एशिया" खण्ड के सब प्राचीन देशों में युद्ध की रीत ऐसी ही थी। सेनापति लड़ाई के समय में रथी घोड़सवार और हाथी के सवारों पर विशेष दृष्टि रखता था, पैदलों का अधिक ख़याल नहीं करता था। ग्रीक वालों की भी लड़ाई की रीति पहले ऐसी ही थी यह बात होमर के महाकाव्य के देखने से मालूम होती है। लेकिन 'ग्रीक' वालों ने बहुत जल्द प्रजा तन्त्र शासन प्रणाली यानी प्रजा राज की रीति जारी की, उस से ज़मीदार लोगों की बड़ाई घट गई। सब प्रजा में के लोग ज़मीदार हो सकने लगे इस लिये अब वे दरिद्र न रहे और लड़ाई की ज़रूरी चीजें और हथियार ख़रीद कर सके। ग्रीस बहुत ही पहाड़ी देश है इस लिये वह सवारों के लिये बल दिखलाने की अच्छी जगह नहीं है। इस कारण से वहां पैद

सवार लोगों का बहुत मान नहीं होता था। केवल पैदल लोगों का बहुत आदर हुआ करता था। रोम भी स्वतन्त्र प्रजाश्रित था वहां पैदल लोगों का बहुत सम्मान होता था। 'ग्रीक' और 'रोम' के पैदल सिपाहियों के साथ एक समय में किसी जाति के लोग लड़ नहीं सकते थे। जो कोई उन दोनों जातियों के लोगों के साथ लड़ाई करता था वह जैसे रूई आग में जल जाती है वैसे ही जल्द नाश हो जाता था। यह बात देखी जाती है कि यूरोप की नई जातियों में भी लड़ाई की रीत ठीक ऐसी ही चली आती है। जब उन लोगों में ज़मीदारों की बढ़ती थी तब पैदलों को कोई नहीं पूछता था, लेकिन उनमें राज की रीत ज्यों ज्यों अच्छी होती चली त्यों त्यों पैदलों का आदर होने से लड़ाई की रीति बदल चली। पैदलों की ख़ातिर होने से लड़ाई की एक और भी रीत चली कि किसी किसी राज्य में लोग अमन चैन के समय में अपना अपना काम किया करते हैं और लड़ाई लगने पर हथियार लेकर लड़ने जाते हैं उस समय में ज़मीदार लोग अपनी अपनी ज़मीदारी के लोगों को लेआ कर राजा की सहायता करते हैं। लेकिन जब राज्य बड़ा होजाता है और ज़मिंदार लोगों का सम्मान बहुत नहीं रहता तो ऐसी बात नहीं हो सकती। तब राज्य की रक्षा करने के लिये कुछ लोगों को तनखाह देकर रखना पड़ता है। ये लोग जब तक जीते रहते हैं राजा

से तलब पाकर केवल लड़ाई ही काम करते हैं। आज कल यूरोप की सब जगहों में ऐसा ही है। अब लड़ाई एक खास विद्या गिनी जाती है गणित, पदार्थ विद्या और रसायन आदि सब शास्त्र, शस्त्र विद्या के काम में आते हैं। अब किसी असभ्य जाती का इतनी सामर्थ नहीं कि आज कल के यूरोप वालों को हरा सके। लेकिन जैसे विद्या के बढ़ने से लड़ाई के ढंग बहुत से निकले हैं वैसे शान्ति इसकी बढ़ती होने से लड़ाई के बड़े बड़े दोष भी दूर हो गये हैं। आज कल सभ्य यूरोप वालों में लड़के बुढ़े या औरतों पर कोई लड़ाई की आफत नहीं पड़ने पाती शत्रु अगर शरण ले तो उसकी भी जान नहीं मारी जाती है। लोग पकड़े जाकर दास नहीं बनाये जाते हैं। यूरोप का कोई राजा प्रबल होते ही दिग्विजय करने नहीं निकलता है। और किसी किसी बड़े लोगों के मन में यह भी है कि अगर किसी तरह लड़ाई का रिवाज उठ जाय तो सब से भला है।

तृतीय प्रकरण।

प्रथम अध्याय।

मिसर वालों का हाल।

(मिसर देश और वहां के रहने वालों का वर्णन)

मिसर देश अफ्रिका के उत्तर पूरब के कोन पर है। इस देश का इतिहास बहुत ही प्रसिद्ध है। दुनियां में पुरानी जातियों के जितने लोग शिक्षा पाकर विद्या, धर्म, शिल्प यानी कारीगरी में बड़े नामी हुए उन में मिसर वाले सभ्य होकर सब बातों में सब से बढ़े बढ़े रहे। पुराने मिसरी लोगों की रीत व्यवहार, राज काज और धर्म हम लोगों की रीत व्यवहार आदि के साथ ऐसे मिले देख पड़ते हैं कि साफ़ मालूम होता है कि किसी समय में उनसे हम लोगों का हेल मेल था।

मिसर देश की प्रकृति एक अजीब ढंग की है। वहां पानी बहुत कम बरसता है और कभी कभी पच्छिम और पूरब तरफ़ से जो हवा बहती है उसके साथ बहुत सी बालू उड़ आकर देश को भर देती है। केवल एक नील नदी के कारण यह देश बसा है। उस नदी में हरसाल बाढ़ आती है। और उसी बाढ़ के कारण सारे देश में कीचड़ पानी बहुत होजाता है इस कारण यह देश बहुत उप-

आज है। लेकिन नील नदी आप अपना पानी सारे देश में नहीं फैलाती इसका पानी कहीं पांच कोस से अधिक नहीं पड़ता। पर पुराने मिसर वाले इतने बांध और आहर बना गये हैं कि आज तक उन्हीं सभों के सबब से मिसर देश भर में नील का पानी जाता और बहुत अनाज पैदा होता है। आज कल सच पूछो तो मिसर वालों को कुछ भी नहीं करना पड़ता है। खेत बो कर मामूली समय में अनाज काट लेते हैं। और चैन से दिन काटते हैं, परन्तु जब कि वे बांध और आहर नहीं थे तब उन लोगों को इतनी मिहनत करनी पड़ती थी कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इस तरह श्रम और यत्न करने के कारण पुराने मिसर वाले गुणवान, धनवान, और नामी हुए थे। वे लोग अपनी जीविका के लिये पोखरे खोदते थे, बांध बांधते थे, और बड़े बड़े पहरे तैयार करते थे। और जब ये सब काम बन चुके तब वे अपनी मिहनत करने की टेव के कारन बड़े बड़े प्रसिद्ध मकान और पिरामिड तैयार करने लगे! जो लोग मिहनती होते हैं वे जरूरी काम बिना तमाम किये नहीं बैठ सकते। इन सब बनावटों की निशानियां मिस्र की किसी किसी जगहों में अब तक देख पड़ती हैं। थीब्स, मिम्फ़िस, कारनाक, और लक्सर आदि कई एक जगहों में जो सब रचना और चित्र हैं उन की सुंदरता का बयान नहीं हो सकता है। वहांजो सब

खंभे और दीवार हैं, उन में हर तरह के चित्र बने हुए हैं, वे सब चित्र व्यर्थ नहीं हैं। पहले पुराने मिसरियों को वर्णमाला अक्षरों की न थी। उनकी वर्णमाला चित्रमय थी यानी पशु, पक्षी पशु और मनुष्यों के अनेक अंगों के चित्र के द्वारा मिसरी लोग लिखने पढ़ने का काम चलाते थे। आज तक करीब नौसौ तरह के ये चित्रमय अक्षर देख पड़े हैं।

यह किसी को विश्वास न था कि इन चित्रों का अर्थ कोई लगा सकेगा लेकिन फ़्रांस के राजा बड़े वीर नेपोलियनबूनापार्ट के समय राशेटा नामी क़िले में जो कि नील नदी पर है, एक पत्थर निकला था उस पत्थर में एकही बात तीन तरह के हर्फ़ों में लिखी हुई थी। सब के ऊपर चित्रमय अक्षरों में और बीच में मिसरी लोगों के साधारण अक्षरों में और सब के नीचे यूनानी अक्षरों में लिखी थी। उस पत्थर को देखकर सम्पोलियन नामी एक फ़्रांस के पंडित ने मिसर के चित्रमय अक्षरों के बांचने का उपाय निकाला।

पुराने मिसर वालों की किताबें बहुत नहीं मिलती और जो दो एक पिरामिड के अन्दर और किसी बड़े मकानों में पाई भी गई हैं उनके अर्थ आज तक अच्छी तरह समझ में नहीं आसके। पर उन मकानों की दीवारों पर बहुत तरह के चित्र देखे गये हैं जिनसे मिसरी

लोगों के आचार व्यवहार के सब हाल जाने जा सके हैं। उन चित्रों में यह बना है कि मिसर वाले कहीं तो हल जोतते हैं, कहीं बीज बो ते हैं, कहीं धान काटते हैं, कहीं मुनक्का या दाख की खेती करते हैं, किसी जगह भेड़ियां चराते हैं, और कहीं कुत्ते और पोसुवे सिंह के साथ तीर, कमान और सिंघा लेकर शिकार खेलते हैं। उन नक़्शों को देखने से यह मालूम होता है कि मिसरवाले मछली और चिड़ियों के पकड़ ने में बहुत खुश होते थे। शहर वालों के जो चित्र बने हैं उनमें यह देखा जाता है कि मिसरी लोग कहीं तो काठ के तख़्तों पर खोदाई करते हैं, कहीं कपड़ा बिन रहे हैं, कहीं चित्र बनाने में मश्ग़ूल हैं, कहीं सोने चान्दी और हीरों के भूषण बना रहे हैं। मिसर वालों के मुर्दों के बदन पर जो कपड़े देख पड़ते हैं उनसे साफ़ मालूम पड़ता है कि मिसरी लोग कपड़ा बनाने में बहुत निपुण थे। वे लोग शीशा भी तैयार कर सकते थे और एक पेड़ जो कि जल की सरहरी के किस्म का होता है उसी के पत्तों से काग़ज़ बना सके थे।

इन सब चित्रों से मिसरी लोगों की गृहस्थी के असबाब खाने पीने के व्यवहार आदि बहुत बातें जानी जाती हैं। उनसे यह बात भी मालूम होती है कि मिसरी लोग बहुत गम्भीर स्वभाव होते थे और वे लोग धर्मात्मा तो थे, परन्तु संसार का सुख भोग भी किया करते थे। वे लोग दूसरे प्राचीन लोगों की तरह औरतों को पर्दे में नहीं रखते थे और

जब कुश्ती गाना, बजाना, जानवरों की लड़ाई होती थी तब मर्द औरत मिलकर तमाशा देखते और खाते पीते थे। मिसरी लोगों की चित्रकारी के ज़रिये से बहुत सी बातें मालूम हुई हैं। उन लोगों ने इस फन में जो बड़ी तरक्की की थी वह भी इससे साफ़ ज़ाहिर होती है। उनकी चित्र, खोदाई की विद्या आदि कितनी भी रही हो पर वे यूनानियों की बराबरी कभी नहीं कर सकते हैं। पहिले तो यह बात देखी जाती है कि मिसर वाले अनूठी चित्रकारी करने में बहुत दिल लगाते थे जैसा कि सिंह का धड़ और आदमी का मुंह मिलाकर प्रसिद्ध "स्फिंस" नाम मूरत बनाते थे ऐसी ही और बहुत मूरत भी वे बनाते थे। दूसरी बात यह है कि जहां मनुष्य की मूरत बनी हुई है उसको देखने से यह मालूम होता है कि वे लोग उस मूरत में जहां जैसा चाहिये नहीं बना सकते थे। शरीर संस्थान विद्या को पढ़ कर आज कल के चितेरे लोगों की नाई पुराने यूनानी चितेरे लोग भी जैसी कि हड्डी और मास की जिस जिस जगह बदन में उंचाई निचाई है वैसी मूर्ति में भी बना सके थे पर वैसी पुराने मिसर वाले नहीं बना सके थे। यह मालूम होता है कि मिसर वालों ने प्रकृति के अनुसार चित्रकारी नहीं सीखी थी। लेकिन यह साफ़ मालूम होता है कि वे लोग कितने एक ठहराये हुए कायदों के मुताबिक कारीगरी के काम किया करते और मिसरी लोगों की खोदी हुई मूर्तियों को देखने से भी ऐसाही मालूम होता है। मुंह का तौर

जैसा सुन्दर चाहिये वैसाही होता है लेकिन उससे मनके भाव प्रकाश नहीं होते।

मिसर वालों के मकान बनाने में भी ऐसे ही दोष पाये जाते हैं। उन लोगों के मकान बहुत बड़े मजबूत और अच्छे होते थे, लेकिन खूबसूरत नहीं मालूम पड़ते थे। इसमें कुछ संदेह नहीं कि मिसर वाले नई नई बातें बहुत निकालाकरते थे पर जैसी चाहिये वैसी निपुणता के साथ पूरी नहीं कर सके थे।

७ इस बात में एक और प्रमाण यह है कि मिसर वालों ही ने सब के पहिले अक्षर लिखने की रीत निकाली थी। लेकिन उन के अक्षर चित्रमय थे कि जिनसे पढ़ना लिखना बहुत कठिन मालूम होता था। उन्हीं से सीख कर फ़िनिशिया वालों ने वर्णमाला की रचना की और मिसरियों ने बाद उसके उन लोगों से वह वर्णमाला सीखी। यहां यह भी कहना चाहिये कि मिसर में दो तरह के अक्षर जारी थे, एक तो चित्रमय अक्षर जो केवल पुरोहित लोग पढ़ते थे दूसरा वह कि जो साधारण लोग जानते थे और वह फ़िनिशिया लोगों के अक्षर का उतार था। मिसरी लोगों की किताबें चित्रमय अक्षर में लिखी जाती थीं।

दूसरा अध्याय ।

(मिसरियों के धर्म का हाल ।)

पहिले लिख आये हैं कि मिसरी लोग बड़े धीर और धर्मात्मा होते थे। यह मालूम होता है कि पहले मिसर वाले अद्वैतवादी थे अर्थात् जगत को ईश्वर मय समझते थे, इसके बाद अद्वैत मत धीरे धीरे गुम होगया और सब साधारण लोग मूर्ति पूजा करने लगे। इसका कारण यह हुआ कि मिसर के पुरोहितों ने ईश्वर की शक्ति के अनेक रूप कल्पना किये थे और सबों के नाम भी जुदे जुदे ठह-राये थे तो इस में कुछ आश्चर्य नहीं कि मिसर के साधा-रण लोग उन सब शक्तियों और नामों के मतलब नहीं समझ कर उन मूर्तियों ही को पूजने लगे हों। इसी तरह से मिसर में मूर्ति पूजा फैल गई। मिसरी लोगों के मत से ईश्वर ने अपने को दो अंशों में बांट कर जगत की रचना की थी। उन दो शक्तिवाले अंशों में से एक का नाम

'नेफ़' था वह नित्य और निर्विकार और केवल एक ही था। दूसरे अंश का नाम "पथा" था यह जगत की सृष्टि करने वाला था। और "आमन" नाम एक दूसरी शक्ति एक अलग देवता बन कर जगत का पालन करती थी। "असेरिस" और "आईसिस" नाम मिसरी लोगों के और भी दो प्रधान देवता थे। हम सभों के देश में जिस तरह "शिव" और देवी को पूजते हैं उसी तरह वे लोग भी इन दोनों देवताओं को पूजते थे। दरहक़ीक़त में मिसरी लोग प्रकृति के उत्पन्न करने वाली शक्ति विशेष को 'आसेरिस' और आईसिस नाम से पूजते थे। हमारे यहां जैसे असुर और देवताओं की लड़ाई का हाल लिखा है वैसे ही मिसरियों के यहां भी लिखा है कि टाईफ़न नामी असुर के साथ आसेरिस देवता की लड़ाई हुई थी। जानवरों में गाय, कुत्ता, बिल्ली और आईबिस नामक सारस पक्षी विशेष और बाज़ और कई एक तरह की मछलियां मिसर में पूजी जाती थीं। और दूसरे जानवरों की पूजा वहां सब देश भर में नहीं होती थी। जिन जानवरों को एक प्रदेश के लोग पूजते थे उन्हीं को उसके पास के लोग अपवित्र समझते थे। कहीं कहीं मिसरी लोग सिवाय उन जानवरों के कि जिन में ख़ास कोई गुण पाये जाते थे किसी दूसरे जानवर को नहीं पूजते थे। मेम्फ़िस नगर में एपिस देवता की पूजा भी ऐसे ही जारी हुई थी।

एपिस * उस गौ को कहते हैं कि जिसका रंग काला हो और माथे में तिकोना सुफेद टीका हो और पीठ पर बाज की सूरत का चिन्ह हो। एपिस के पूजने वाले भूत, भविष्य और वर्त्तमान तीनों काल के हाल जानते थे।

मिसरी लोग दूसरा जन्म होना मानते थे और स्वर्ग नर्क भी मानते थे। उनके मत में आदमी के मरने के बाद उसका जीव आत्मा जमीन पानी और आकास में रहने वाले सब प्राणियों को देह धारण करता था। और अन्त में तीन हजार वर्ष के बाद फिर मनुष्य का जन्म पाता था। मिसरी लोगों के यम लोक का नाम "अमिन्थी" था और असिरिस उस जगह का प्रधान था। वह पुण्य और पाप का विचार कर के आदमियों को उनके कर्मों का फल देता था। मिसरी लोग इसी दुनिया में पर-लोक में के विचार का नकल करते थे, उन सबों में यह रिवाज जारी थी कि किसी आदमी के मरने के बाद उसके जन्म भरके भले बुरे कामों को विचार ते थे और जो उसके काम भले ठहराते थे तो वह बिन रोक टोक दफ़न किया जाता था यानी गाड़ा जाता था और नहीं तो उसे कभी नहीं गाड़ते थे। क्या राजा क्या पुरोहित सबों का ऐसा

* ऐसी भी पुरोहित लोग चालाकी से बना देते थे इस में कुछ सन्देह नहीं।

ही विचार किया जाता था। इस रिवाज के रहने से मिसर वालों की चाल बहुत ही सुधर गई थी। वे लोग यह समझते थे कि देह का नाश होने से आत्मा भी नष्ट हो जाता है, और जब तक देह रहती है तब तक आत्मा शरीर से अलग होने पर भी नाश नहीं होता। इस लिये मिसर वाले मुर्दे की बड़ी रक्षा करते थे उन लोगों ने जो बड़े बड़े पिरामिड बनाये थे वे मुर्दों की रक्षा ही के लिये थे। मिसर वाले इस डर से कि अगर बुरा काम करेंगे तो हमारी मरी मट्टी की रक्षा न की जायगी अपने चाल चलन सुधारने में बड़ा यत्न करते थे। पुराने मिसरियों ने विद्या की उन्नति कहां तक की थी यह हम सबों को ठीक नहीं मालूम है। सिर्फ इतना मालूम हुआ है कि वैद्य विद्या की पैदाइश उन्हीं लोगों से है। वे लोग ज्योतिष भी जानते थे उन लोगों ने साल को १२ महीनों में और महीनों को ३० दिनों में बांटा था। और हर साल में पांच दिन ज्यादे ले लिया करते थे लेकिन इस पर भी साल भर में ६ घन्टा घटता है। और १४६० वर्ष में एक पूरा साल ही ग़ायब हो जाता है। यह बात मिसरी लोग भी जानते थे इसी लिये १४६० वर्ष के बाद एक वर्ष अधिक बढ़ा दिया करते थे। वे लोग वैद्यक में हुशियार थे लेकिन साहित्य आदि शास्त्रों में मिसरी लोग बहुत अच्छे कभी न हुए। वे लोग संगीत विद्या का भी अभ्यास

रखते थे पर उस में भी जैसा होना चाहिये वैसे निपुण न हुए।

मिसरी लोगों के धर्म की रीत और लौकिक व्यवहारों को अच्छी तरह देखने से मालूम होगा कि वे लोग अपने मनके भाव यानी मतलबों को असानी से रूपक आदि अलंकारों में भूषित कर प्रगट कर सकते थे यह शक्ति पुराने हिन्दू और दूसरी जातियों में भी बहुत प्रबल थी।

तीसरा अध्याय।

मिसरी लोगों के समाज के नियम।

प्रसिद्ध यूनानी ग्रन्थकार "हीरोडोटस" और "डायोडोरस" की किताबों से पुराने मिसरी लोगों का इतिहास मालूम होता है। इन दोनों ने मिसर में सफर करके वहां के पुरोहितों से जो बातें सुनी उन सबों को अपनी किताबों में लिखा। मालूम होता है कि इसी कारण उन की किताबों में बहुत सी कहानियां भी भरी हैं। यह असम्भव मालूम होता है कि पुरोहित लोग अपने देश का पुराना हाल दूसरे देश और दूसरे मत के आदमियों को ठीक ठीक बतलाये हों।

लेकिन 'मानेथो' नाम एक मिसरी पुरोहित ने यूनानी भाषा में एक इतिहास की पुस्तक लिखी थी। जो वह पुस्तक मिलती तो मिसर का इतिहास अच्छी तरह मालूम होता लेकिन बद-क़िस्मती से वह पूरी पुस्तक आजकल नहीं मिलती। दूसरे लिखने वालों ने अपनी किताबों में कहीं कहीं उस पुस्तक के कुछ हिस्सों को लिखा है उन को देखने से मिसर का पुराना हाल जितना मालूम हो सका यहां लिखा जाता है।

मिसरी लोगों के इतिहास लिखने में पहले बयान करना चाहिये कि वे कहां से आये थे और मनुष्य की जातियों में वे किस जाति के लोग थे। लेकिन इन बातों का ठीक अब तक हाल नहीं मिला है। आजकल के इतिहास लिखने वालों ने बहुत कोशिश करके यह ठहराया है कि पुराने मिसरी, ककेशीय जात वाले सेमेटिक, और आफ़्रिका के आदि रहने वाले इथियोपीय लोगों के संयोग से पैदा हुए थे। सेमिटिक वंश वाले फ़ारस के इलाक़े कूश नाम स्थान से आकर अरब के नैरूत कोन होकर लाल समुद्र के पार उतरे और पच्छिले न्यूबिया देश में जा बसे। वहां उन लोगों ने नील नदी के दो शाखाओं के बीच की जगह में एक राज क़ायम किया उस की राजधानी का नाम "मेरो" पड़ा, उस नगर के खंडहर अबतक देख पड़ते हैं। लेकिन उसका असल हाल अबतक नहीं पाया गया है। केवल यह बात सुनने में आती है कि

"मेरो" राज्य में पुरोहितों की शासनप्रणाली यानी हुकूमत की रीत जारी थी और वहां के लोगों ने थोड़े ही दिनों में सभ्य और ज़ोरावर हो कर उत्तर तरफ़ अपना राज्य बढ़ाया था। ये लोग जितना उत्तर तरफ़ गये उतना ही वहां के असल रहने वालों के साथ मिलते गये। इस तरह पुराने मिसरी लोगों की पैदाइश हुई।

जब "मेरो" नगर कुछ घटते घटते दिनों में नष्ट हो गया तब 'थोवस' और 'मेम्फिस' नगर बहुत प्रबल हो गये। और वहां के लोगों ने कारीगरी में बड़ी तरक्की की। जब दूसरी दूसरी जाति के लोग आकर एक दूसरे देश में बसते हैं तब वहां जात पांत का रिवाज़ जारी होता है "मेरो" राज्य में भी ऐसा ही हुआ या वही मिसरियों में रहा। मिसर के सब लोग पुरोहित, योधा, और कई दूसरी जातियों में बटे थे, उन में से पुरोहित लोग सब से बड़े और योधा लोग उनसे नीचे गिने जाते थे। इन्हीं दो जातियों के मनुष्य राज गद्दी पर बैठ सक्ते थे। राज गद्दी भी और पदार्थों की तरह बाप के मरने बाद बेटे को दी जाती थी। लेकिन राजा किसी तरह स्वेच्छाचारी नहीं हो सक्ता था। जितने एक क़ायदों के मुताबिक उसे काम करना पड़ता था। पुरोहित लोग उन सब क़ायदों को बनाते थे और राजाओं को सदा सीख दिया करते थे। इससे यह बात ख़याल को आ सक्ती

है कि उन में और राजाओं में कभी कभी बड़ा विवाद भी हुआ करता था।

पुरोहित लोग भी जो चाहते थे सो सब नहीं कर सके थे। एक से अधिक विवाह नहीं कर सके थे। और न बहुत भोजन करते थे और न सुस्ती में दिन काट सके थे, उनको सदा विद्या सीखनी पड़ती थी। और जो लोग देवताओं की सेवा करने में असमर्थ थे वे वैद्य या कारीगरी या घोड़ों के सिखाने के कामों में मुकर्रर किये जाते थे। लेकिन जैसे उनके लिये ये सब कठिन बंधेज मुकर्रर थे वैसे ही उन लोगों को लाख़िराज ज़मीन आदि जीविका भी मिलती थी। उन के सिवाय और कोई लिखने पढ़ने नहीं पाता था, और उन्हीं के द्वारा धर्म के सब काम किये जाते थे। वे लोग यह भी कहते थे कि हमलोग जिन नियमों से विचार करते हैं वे साक्षात ईश्वर के बनाये हुए हैं और बहुत हैं। चोर, झूठे गवाह, और खूनी को मिसर वाले जान से मार डालते थे। मिसर वालों के योधाओं को भी लाख़िराज ज़मीन मिलती थी। वे लोग किसी तरह का व्यवसाय नहीं करने पाते थे उनको सदा वैसी ही कोशिस करनी पड़ती थी। जिस से शरीर का बल बढ़े और अस्त्र शस्त्र विद्या में निपुण हों इसमें कुछ संदेह नहीं हो सक्ता कि मिसर वाले युद्ध में बहुत निपुण थे। उन लोगों की सेना लोहे का बखतर पहनती थी उनके प्रधान हथियार ढेल-

बांस, तलवार और शूल थे। मिसर वाले किला बनाने में भी बहुत निपुण थे कभी कभी मिसर के राजा लोग दिग्विजय करने को निकलते थे और बहुत से देशों को जय कर आते थे।

चौथा अध्याय।

मिसरियों की स्वाधीनता का वर्णन।

मिसरी लोगों की स्वाधीन अवस्था का हाल बहुत अचरज कहानियों से भरा है। मिसर के प्राचीन राजा लोग देवता, अवतार वा उपदेवता समझे जाते थे। ऐसे कई एक राजाओं के बाद ३० राजवंशों के नाम लिखे हैं। वे लोग सब मनुष्य थे। उन में सब से पहिला "मोनिस" था वह सब विद्या और गुणों में निपुण था। इन राजाओं के नाम असिल यानी बनावटी हैं यह बात मालूम नहीं होती, लेकिन इन लोगों का ठीक हाल नहीं मिलता। यह कहा गया है, कि उन में से "सिसष्ट्रिस," नाम एक प्रतापी राजा ने एशिया के सब पश्चिम प्रदेशों को और यूरोप के भी कुछ हिस्सों को जीता था, इतिहास में इसके दिग्विजय का हाल लिखा हुआ है।

कहते हैं कि वह एक दिन घमंड के मारे उन राजाओं से अपनी गाड़ी खिंचवाता था जिन को उसने जीता था, उन अभागी राजाओं में से एक राजा रथ के पहिये की ओर बराबर देख रहा था। जब "सिसष्ट्रिस" ने उस से पूछा कि क्या देखता है तो उसने यह उत्तर दिया कि पहिये का एक हिस्सा कभी ऊपर आता है कभी नीचे जाता है। बुद्धिमान "सिसष्ट्रिस" ने इस का असल मतलब समझ कर अपने जी में विचार किया कि ऐसे ही हमारी भी लक्ष्मी क्षण भर के लिये है। और जल्द ही उसने अपनी बुरी चालों को छोड़ दिया और राजाओं का जैसा चाहिये वैसा मान किया।

मानीथो नामी इतिहास लिखने वाले ने यह लिखा है कि "टिमिरस" राजा के समय में "हिकसस," नाम एक जातिके लोगों ने अरब से आकर मिसर देश पर चढ़ाई की थी। इन लोगों ने मेम्फिस, नगर को अपनी राजधानी बनाई थी। ये लोग सिमेटिक, वंश के रहे होंगे, इन्हीं लोगों के समय में यहूदी लोग मिसर में आये थे और बड़ा आदर पाया था। इस वंश के राजा लोग मेषपाल यानी गड़ेरिये कहलाते थे। इन लोगों ने ५११ बरस तक मिसर में राज किया लिदान मिसरीयों ने इन लोगों को हरा कर देश से निकाल दिया। मेषपाल राजाओं के निकाले जाने के बाद मिसर